JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

अगस्त 2024

हर किसी के द्वारा अस्वीकार किए जाने से, और परिस्थियों द्वारा छोटा किए गए, आपको परमेश्वर ने अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए चुना है।

परमेश्वर का चुनाव

TECH - 7

मोबाइल फ़ोन संभालें

हेलो दोस्तों ! तकनीक की इस तेज़ी से उभरती दुनिया में, हमें लगातार कई नई चीज़ें सीखने की ज़रूरत महसूस होती है। "अपने फ़ोन को समझदारी से संभालें" लेख के ज़रिए, आपने क्लाउड स्टोरेज और इसकी क्षमता के बारे में की आपके स्कूल, कॉलेज और कार्यस्थल में आपकी ये कैसे सहायता कर सकता है, इसके विषय में आकर्षक जानकारी प्राप्त की है। यह क्या ही रोमांचक है? लेकिन रुकिए, और भी बहुत कुछ है! क्या आप यह भी जानना चाहते हैं कि क्लाउड स्टोरेज सार्वजनिक और सरकारी मान्यता प्राप्त स्थानों में कैसे मदद कर सकता है?

उदाहरण के लिए, क्या आपने कभी स्वयं को ऐसी परिस्थिति में पाया है जहाँ आप ट्रेन यात्रा के दौरान अपना असली पहचान पत्र साथ रखना भूल गए और जुर्माना भरना पड़ा? शायद आपने सोचा होगा, "ओह, काश मैं अपने फ़ोन पर अपना पहचान पत्र दिखा पाता!" अंदाज़ा लगाइए? डिजीलॉकर(DigiLocker), एक शानदार मोबाइल एप्लिकेशन है, वही जिसकी आपको ज़रूरत है।

डिजीलॉकर(DigiLocker) डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में प्रस्तावित किया गया एक अभूतपूर्व मोबाइल एप्लिकेशन है। यह आपको दस्तावेज़ों को डिजिटल रूप से संग्रहीत करने, इस्तेमाल करने और सत्यापित करने की अनुमति देता है। अपने पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, आधार कार्ड, स्कूल मार्कशीट, बीमा पॉलिसी के दस्तावेज़ और बहुत कुछ जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को एक डिजिटल तिजोरी में सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने की सुविधा की कल्पना करें! अब आपको अपने दस्तावेज़ों की मूल प्रतियाँ हर समय साथ रखने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। आप जब भी ज़रूरत हो, उन्हें आसानी से डिजीलॉकर(DigiLocker) से निकाल सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं।

कल्पना करें: आपको ट्रैफ़िक पुलिस ने रोका है, और अपने बटुए में हाथ डालने के बजाय, आप आत्मविश्वास से डिजीलॉकर(DigiLocker) से अपना डिजिटल रूप से संग्रहीत ड्राइवरी लाइसेंस दिखाते हैं। यह कितना बढ़िया है? इसके अलावा, आप अपने सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को एक ही स्थान पर सुरक्षित रूप से रख सकते हैं। यह जानकर आपको कितनी शांति मिलेगी कि प्राकृतिक आपदाओं के समय, जब आप अपने महत्वपूर्ण दस्तावेज़ खो सकते हैं, तो डिजीलॉकर(DigiLocker) आपकी मदद के लिए हमेशा मौजूद रहेगा!

अब, आप सोच रहे होंगे, "मैं डिजीलॉकर(DigiLocker) का इस्तेमाल कैसे शुरू करूँ?" यह आसान है! आप www.digilocker.gov.in वेबसाइट पर अपने मोबाइल नंबर और आधार नंबर का उपयोग करके डिजीलॉकर(DigiLocker) वॉलेट के लिए आवेदन कर सकते हैं। या, अगर आप चाहें तो अपने एंड्राइड(Android) या आईफ़ोन(iPhone) पर प्ले-स्टोर(Play Store) या एप-स्टोर(App Store) से ऐप डाउनलोड करें और कुछ आसान चरणों में रजिस्टर करें।

लेकिन क्या होगा अगर आपका मोबाइल नंबर आधार के साथ रजिस्टर नहीं है? कोई बात नहीं! आप इसे अपने नज़दीकी स्थायी आधार नामांकन केंद्र पर अपडेट कर सकते हैं और फिर डिजीलॉकर(DigiLocker) के लिए आवेदन कर सकते हैं। एक बार जब आप आवश्यक विवरण भर देते हैं, तो आप एक सुरक्षा पिन बनाएँगे और अपनी ईमेल आईडी(email id) दर्ज करेंगे। इस प्रक्रिया को पूरा करने के बाद, आप एक लॉगिन आईडी(login Id) और पासवर्ड निर्धारित करेंगे। वॉयला! अब आप जब चाहें अपने डिजिटल लॉकर का उपयोग कर सकते हैं।

ठीक है दोस्तों, मुझे उम्मीद है कि इस महीने की तकनीकी जानकारी आपके लिए न केवल उपयोगी रही होगी बल्कि रोमांचक भी रही होगी। बने रहिए; मैं अगले महीने आपसे और भी रोमांचक जानकारी के साथ मिलूँगा। तब तक, अपना ख्याल रखें और अलविदा!

प्रस्तावना
मेरी प्यारी छोटी बेटी (बेटा),

मेरी प्यारी छोटी बेटी (बेटा),

यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में अभिनन्दन! आइए हम परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उन्होंने हमें इस वर्ष के सात महीनों से गुज़रने और आठवें महीने में प्रवेश करने के योग्य बनाया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हर महीने, प्रभु इस युवा पत्रिका के माध्यम से आपको मजबूत बनाते हैं। इस महीने, हम 'परमेश्वर के चुनाव' की गहन प्रकृति का गहराई से अध्ययन करेंगे।

परमेश्वर का चुनाव हमेशा अति प्रेरणादायक होता है। वह दीन को धूलि से उठाता है और ज़रूरतमंदों को राख के ढेर से ऊपर उठाता है; वह उन्हें राजकुमारों के साथ बैठाता है और उन्हें सम्मान का सिंहासन विरासत में देता है। उसने हाबिल से प्रेम किया और उसकी भेंट स्वीकार की, लेकिन उसने कैन के बलिदान को स्वीकार नहीं किया। वह घोषणा करता है, "मैंने याकूब से प्रेम किया, लेकिन मैंने एसाव से घृणा की।" परमेश्वर ने जिन लोगों को चुना है वे ज्यादातर साधारण, अपूर्ण, अस्वीकार किए गए और तिरस्कृत होते हैं। अपनी कमियों के बावजूद, उन्होंने परमेश्वर से बेहद प्रेम किया और उस पर भरोसा किया। जिन लोगों की संसार ने अवहेलना की, उन्हें प्रभु ने गले लगाया, उनके जीवन को बदल दिया और उन्हें नई शुरुआत दी।

यीशु मसीह ने सुसमाचार को पूरी दुनिया में फैलाने के लिए बारह शिष्यों को चुना। उसने उन पर भरोसा किया, भले ही वे विद्वान या प्रभावशाली व्यक्ति नहीं थे, बल्कि साधारण मछुआरे थे, फिर भी उसने उन्हें अपना मिशन सौंपा। परमेश्वर ने बुद्धिमानों को लज्जित करने के लिए संसार की मूर्ख चीजों को चुना और बलवानों को लज्जित करने के लिए संसार की कमजोर चीजों को चुना। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे बीच दीन लोगों को चुना है, इसलिए हमें यह कहते हुए घमंड नहीं करना चाहिए कि, "परमेश्वर ने मुझे चुना है।" यह पूरी तरह से उसके अनुग्रह से है। परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम मेरी दृष्टि में अनुग्रह पा चुके हो।" आज भी, परमेश्वर ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए तुम्हें चुना है। उसने तुम्हें चल रहे पुनरुद्धार कार्य के लिए अभिषिक्त किया है, तुम्हें सामर्थ और वरदान दिए हैं ताकि तुम उठ सको, चमक सको और तेज़स्वी होवो।

तुमने परमेश्वर को नहीं चुना, बल्कि उसने तुम्हें अपनी श्वास और अपने हाथ की उंगलियाँ बनने के लिए चुना है। तुम्हारे हर कदम और प्रयास में परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए और उसकी इच्छा पूरी होनी चाहिए। याद रखो कि परमेश्वर ने तुम्हें युवाओं की एक सेना खड़ी करने और संसार भर में बेदारी फ़ैलाने के लिए चुना है। इस संज्ञान के साथ कार्य करो!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजर

राख से सुन्दरता तक

इस साक्षात्कार में पास्टर आरोन बाला का उल्लेख है, जिनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ जिन्हें यीशु का कोई ज्ञान नहीं था। माता-पिता के प्रेम के बगैर बड़े होने के कारण, उन्होंने अपनी किशोरावस्था के दौरान कचरा बीनने का काम किया और तमिल सिनेमा में गीतकार बनने का सपना देखा। कई कठिनाइयों और तिरस्कारों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने अंततः यीशु मसीह के प्रेम की खोज की, उद्धार पाया और अब गीतों के माध्यम से परमेश्वर के नाम की महिमा करते हैं। आइए, उनसे उनकी जीवन यात्रा के विषय में सुनें।

क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बता सकते हैं?

मेरा जन्म कल्लकुरिची के पुदुपट्टू नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था, एक ऐसे परिवार में हुआ, जिनका यीशु से कोई संबंध नहीं था। मेरी दो बहनें और एक भाई है। मैं पाँच साल की आयु तक अपने माता-पिता के साथ रहा। उसके बाद, उन्होंने मुझे मेरी मौसी के घर पर छोड़ दिया और दिल्ली चले गए। मैंने गाँव के स्कूल में पढ़ाई की, विशेष रूप से दोपहर के भोजन के लिए। भोजन अक्सर बेस्वाद होता था और कभी-कभी उसमें कीड़े और मकोड़े होते थे, लेकिन मैंने उन्हें निकालकर खुशी-खुशी खाया करता था । मेरी मौसी के घर पर, मुझे केवल तभी भोजन (पुराना दलिया या एक गिलास मांड) मिलता था जब मैं हर सुबह गाय का गोबर साफ करता था। केवल शादी या कान छिदवाने के समारोहों के दौरान ही मुझे अच्छा भोजन मिलता था। छुट्टियों के दौरान, मुझे पशु चराना पड़ता था। ऐसी परिस्थितियों में, मैं अपने माता-पिता के प्यार के लिए तरसता था।

आपके प्रारंभिक बचपन का दुःख हुआ । आप यीशु को कैसे जानते थे, जबकि आप ऐसे परिवार में पैदा हुए थे जो उन्हें नहीं जानते थे?

जब मैं सातवीं कक्षा में था, तो गांधीमथी नाम की एक महिला हमारे गाँव में सन्डे स्कूल चलाती थी, जहाँ बच्चों को बाइबल की कहानियाँ सिखाई जाती थीं। एक रात, उसने बच्चों को इकट्ठा किया और नूह और जहाज़ की कहानी सुनाई। वह पहली बार था जब मैंने यीशु के बारे में सुना। तब से, मैंने सन्डे स्कूल में भाग लेना शुरू कर दिया, जहाँ मैंने यीशु के बारे में कई कहानियाँ और गीत सीखे। धीरे-धीरे, मैं यीशु के बारे में और अधिक जानने लगा। सन्डे स्कूल में जाने के कुछ दिनों बाद, पास्टर ने मुझे एक सुसमाचार सभा में मंच पर "नीरिन्द्री वाझवेथु इरैवा" गीत गाने का अवसर दिया। वह पहला मसीही गीत था जो मैंने गाया था, और सभी ने मेरे गायन की प्रशंसा की।

बहुत बढ़िया! आपने सातवीं कक्षा में गायन शुरू किया। जवानी में आपकी आकांक्षाएँ क्या थीं?

इस दुनिया में जन्मे हर दूसरे व्यक्ति की तरह, मेरा भी जीवन में कुछ हासिल करने का सपना था। छोटी उम्र से ही, मैं तमिल सिनेमा में गीतकार बनना चाहता था। उस समय, जब भी कोई नई फिल्म रिलीज़ होती थी, तो उस फिल्म के गाने एक रुपये में गीत पुस्तिका के रूप में उपलब्ध होते थे। मैं हर नई फिल्म के लिए वो गीत पुस्तिकाएँ खरीदता था और स्कूल में पढ़ाई करने का नाटक करते हुए गाने याद करता था। मेरे पास घर पर ऐसी कई गीत पुस्तिकाओं का संग्रह था।

ओके, पाँच साल की उम्र में अपने माता-पिता से अलग होने के बाद क्या फिर आप अपने परिवार से मिले?

नौवीं कक्षा पूरी करने के बाद, मैं अपने माता-पिता के पास रहने दिल्ली चला गया। वहाँ, मेरा परिवार कचरा बीनने का काम करता था, और मैं भी उस काम में उनके साथ शामिल हो गया। हमारे पास अपना घर नहीं था और हम एक छोटे से तंबू में रहते थे। हम सुबह पाँच बजे उठते और बोतलों और अन्य रिसाइकिल करने योग्य चीज़ों को इकट्ठा करना शुरू कर देते थे, जिन्हें दुकानों पर बेचा जाता था, यही हमारी आमदनी का जरिया था। लोग हमें इसलिए नहीं घृणा करते थे क्योंकि हम कचरा बीनने वाले थे। मैं पागलों की तरह रहता था और हमारे परिवार का काम कचरा बीनना और भीख मांगना था। मैं इस काम को करते हुए चार साल तक अपने माता-पिता के साथ दिल्ली में रहा।

बहुत अच्छे, नौवीं कक्षा तक पढ़ाई करने के बाद, क्या युवावस्था में ऐसा काम करना आपके लिए निराशाजनक नहीं था?

एक किशोर के रूप में, वह जीवन सुविधाजनक लगता था क्योंकि मुझे पढ़ाई नहीं करनी पड़ती थी और जब मैं कचरा बीनने का काम नहीं कर रहा होता था तो मैं खेल सकता था। हालाँकि, जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे अपने भविष्य की चिंता होने लगी। मैंने खुद को यह सोचकर सांत्वना दी कि मुझे फिल्म उद्योग में शामिल होने या गीतकार बनने के लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।

हालाँकि, 2008 में अपने चाचा की शादी के लिए तमिलनाडु वापस आने के बाद, मुझे कचरा बीनने का काम नापसंद हो गया और मैंने दिल्ली वापस न लौटने का फैसला किया। कुछ दिनों के बाद, मैं केरल चला

गया और एक बैग बनाने वाली कंपनी में लग गया, जहाँ मैंने डेढ़ साल तक काम किया।

ओके। क्या आपने गीतकार बनने के अपने सपने को पूरी करने की कोशिश जारी रखा? आपको उद्धार का अनुभव कब हुआ?

केरल में काम करना काफी मुश्किल था, इसलिए मैंने गीतकार बनने के अपने सपने को पूरा करने का फैसला किया। 2009 में, एक मित्र के ज़रिए, उसी कपडे में जो मैं पहने हुए था और बिना किसी पैसे के चेन्नई आ गया। काम करने के लिए में एक हॉस्पिटल की कैंटीन में जुड़ गया। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, संडे स्कूल में सीखी गई चीज़ें मुझमें बढ़ने लगीं। जब भी मुझे कोई समस्या या कठिनाई आती, तो एक यीशु को ही मैं जानता था और मैं उसे पुकारता था।

एक सुबह, जब मैं काम पर जा रहा था, तो पास के चर्च से एक वचन सुन पड़ा, "आज से मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।" उस वचन ने मुझसे बात की। जब मैं उस दिन काम पर पहुँचा, तो छुट्टी ले रहे एक व्यक्ति ने मुझे बुलाया और मुझे 200 रुपये दिए, और कहा कि उसे मुझे ये पैसे देने का मन कर रहा है। यह पहला चमत्कार था जो यीशु ने मेरे लिए किया। जैसे-जैसे मैं इन छोटे-छोटे चमत्कारों को देखने लगा, मैं अपनी ज़रूरतों के लिए नियमित रूप से चर्च जाने लगा। हालाँकि, गीतकार बनने की मेरी इच्छा प्रबल रही। मैं फ़िल्म क्षेत्र में काम पाने की उम्मीद में कोडंबक्कम के एक होटल में काम करने लगा। वहाँ काम करते हुए, मैंने अवसरों की तलाश में कई फ़िल्म फ़र्मों का दौरा किया। इस बीच, 2011 में, मैंने पानी का बपतिस्मा लिया।

बहुत बढ़िया। पानी का बपतिस्मा लेने के बाद, आपने यीशु के लिए क्या करना शुरू किया? आपको सेवकाई के लिए कैसे और कब बुलाया गया?

मेरी शादी 2012 में हुई। शादी के बाद, मैं अपने शहर गया और एक मोबाइल की दूकान खोली। अपने गाँव लौटने के बाद, मैंने नियमित रूप से चर्च जाना शुरू किया और परमेश्वर के साथ एक मजबूत रिश्ता बनाया। एक दिन, हमारे चर्च के पास्टर ने मुझे बच्चों की सेवकाई का प्रभार सौंपा और अनुरोध किया कि मैं बच्चों को गीत सिखाऊँ। मैंने इस सेवकाई को गंभीरता से लिया और पूरी लगन से इसे करना शुरू कर दिया। इस बीच, मोबाइल शॉप चलाने से होने वाले कर्ज के कारण, मैंने कर्ज चुकाने के लिए नौकरी खोजने के बारे में सोचा और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ चेन्नई चला गया। मैं नौकरी खोजने, कर्ज चुकाने और फिर मोबाइल शॉप को ठीक से चलाने के लिए गाँव लौटने की उम्मीद के साथ चेन्नई चला गया। 2016 में, एक दिन, प्रभु ने मुझसे बात की, और कहा, "तुम्हारे पास जो सामर्थ है, उसके साथ जाओ।" मुझे नहीं पता था कि प्रभु मुझे उस समय सेवकाई के लिए बुला रहे थे। मैंने सेवकाई के लिए उनके पहले आह्वान को अस्वीकार कर दिया। उसी वर्ष, मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला। उसके बाद, मेरे ऊपर यीशु के प्रेम के विषय में सबको बताने की एक प्रबल बोझ था। इस बोझ ने मुझे प्रभु के लिए कुछ करने की तीव्र इच्छा दी। शुरू में, मुझे किसी को यह बताने में शर्मिंदिगी महसूस होती थी, कि मैं कचरा इकट्ठा करता था । हालाँकि, यह अहसास करने के बाद कि शास्त्र "वह कंगाल को धूलि में उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है" (1 शमूएल 2:8) विशेष रूप से मेरे लिए प्रयोजन था, मैंने साहसपूर्वक अपनी गवाही सभी के साथ साझा करना शुरू कर दिया।

आत्माओं के लिए बोझ और यीशु के लिए कुछ करने की इच्छा प्राप्त करने के बाद, क्या आप पूर्ण-कालिक सेवकाई में शामिल हो गए?

2017 में, एक नए साल की आराधना सभा के दौरान, प्रभु ने मुझसे बात की, और कहा, "तुम्हें लगता है कि तुम अपने कर्ज के कारण चेन्नई आए हो, लेकिन वो क़र्ज़ नहीं है जो तुम्हें यहाँ ले

आया है; मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ। मैं तुम्हारी खोई हुई हर चीज़ की भरपाई करूँगा। इसीलिए मैंने तुम्हें जंगल के रास्ते से गुज़ारा।" मैं तुरंत आशा से भर गया। मैं समझ गया कि मेरी सेवकाई का स्थान चेन्नई में होना है और मोबाइल शॉप को पूरी तरह से बंद कर दिया। प्रभु ने मुझसे बात की, कहा, "जब तुम मसीही गीत गाते हो, तो तुम्हें प्रभु को ऊँचा उठाना चाहिए, और जब तुम फ़िल्मी गीत गाते हो, तो तुम मनुष्य या शैतान को ऊँचा उठाते हो। आप किसकी महिमा करने जा रहे हैं?" उस दिन, मैंने खुद को समर्पित किया, सिनेमा के लिए लिखे गए सभी गीतों को फाड़ दिया, और एक फिल्म गीतकार बनने के अपने सपने को छोड़ दिया। उस दिन से, परमेश्वर ने मुझे उनके बारे में गीत लिखने का अनुग्रह दिया। परमेश्वर ने मुझे जो पहला गीत दिया वह था "नीर मट्टुम एननोडु इल्लमाल पोई इरुंधल।"

अद्भुत! परमेश्वर की इच्छा के लिए खुद को समर्पित करने के बाद आपका जीवन कैसा हो गया?

शुरू में, छोटी-छोटी बातों का तुरंत जवाब मिल जाता था। लेकिन जब मेरे ऊपर बहुत ज़्यादा कर्ज हो गया, तो परमेश्वर की ओर ताकने से तुरंत जवाब नहीं मिला। ऐसे कई दिन आए जब मैंने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर भाग जाने के बारे में सोचा। लोग कहते थे, "तुम घर का किराया नहीं दे सकते, लेकिन तुम बाइबल लेकर घूमते हो," और हमसे घर खाली करने के लिए कहते थे।

मेरे दोस्त ने हमारे लिए दूसरा घर ढूंढ़ दिया। उस घर में घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते समय, परमेश्वर ने मुझे "जीवन थरुम वरथै उम्मीदम उल्लाधु" गीत दिया, जो आज कई लोगों के लिए एक आशीर्वाद है। विपत्ति के बीच, प्रभु ने मुझे ऐसे कई गीत दिए, जिनसे मुझे शान्ति मिली।

> **लोग कहते थे, "तुम घर का किराया नहीं दे सकते, लेकिन बाइबिल लेकर घूमते हो," और हमसे घर खाली करने को कहते थे।**

कई कठिनाइयों के बावजूद, आपने सेवकाई में पूर्णकालिक सेवा कब शुरू की?

2018 में, प्रभु ने मेरी बुलाहट की पुष्टि की और मुझे ओमेगा मिनिस्ट्री की स्थापना के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान किए। शुरुआत में, हमने एक ऐसी जगह से शुरुआत की, जिसमें 10 लोग रह सकते थे। धीरे-धीरे, प्रभु ने हमें ऊपर उठाया, और आज हमारे पास कोडंबक्कम में एक चर्च है, जिसमें 250 लोग रह सकते हैं। मेरी पत्नी ने सेवकाई में बहुत मदद की है। प्रभु ने हमें तीन बच्चों का आशीर्वाद दिया है।

अद्भुत.! प्रभु ने आपको जो गीत दिए हैं, वे कई लोगों के लिए आशीर्वाद रहे हैं। क्या आप "एन करुवाई कंडीरैया" गीत के साथ अपना अनुभव साझा कर सकते हैं, जो वायरल हो गया है और कई दिलों को छू गया है?

मैंने अपनी एकमात्र बाइक को कम कीमत पर बेचकर "एन करुवाई कंडीरैया" रिकॉर्ड किया क्योंकि मेरे पास ऐसा करने के लिए पैसे नहीं थे। हमने मई में दृश्य शूट किए, लेकिन गीत सितंबर तक रिलीज़ नहीं हुआ।

उस समय, मैंने प्रार्थना की, "परमेश्वर, मुझे और कोई गीत न दें; उन्हें दें जिनके पास पैसा है।" लेकिन परमेश्वर ने मुझे अपने वचन से सांत्वना दी, और गीत चमत्कारिक रूप से रिलीज़ हुआ और आठ महीनों में 90 लाख व्यूज मिले। परमेश्वर ने मुझे और भी कई गीत लिखने का अनुग्रह दिया है। अब तक, परमेश्वर ने मुझे 50 से अधिक गीत लिखने और 13 गीत रिलीज़ करने का अनुग्रह दिया है।

आप नौजवानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

प्रिय नौजवान लोगों, क्या आप यह सोचकर परेशान हैं कि "मुझे सभी ने अस्वीकार कर दिया है; कोई भी मेरा सम्मान नहीं करता"? हिम्मत मत हारो! मैं इस बात का जीता जागता सबूत हूँ कि कैसे यीशु किसी को भी ऊपर उठा सकता है और महिमा दे सकता है। यदि प्रभु मुझे अपने गौरवशाली मिशन के लिए चुन सकते हैं और अलग कर सकते हैं, जो प्यार के लिए तरस रहा था, बिना भोजन के और कचरा इकट्ठा कर रहा था, तो वह निश्चित रूप से आपको ऊपर उठा सकता है और आपको कई लोगों के लिए आशीष के जरिये के रूप में उपयोग कर सकता है। हालाँकि, इसे प्राप्त करने के लिए, आपको परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकना होगा और उसके समय का इंतज़ार करना होगा। आपको प्रभु को अनुमति देनी होगी की वह आपको तोड़े और फिर से बनाये। तब आपकी सुंदरता बढ़ जाएगी तब जब वह आपको निर्मल करेगा और शुद्ध सोने के सामन स्थापित करेगा।

राष्ट्र के लिए प्रार्थना करें...
'यीशु छुड़ाता है'

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

बहादुर तीमुथियुस

भाग 7

हेलो दोस्तों, यीशु मसीह के नाम पर आपको अभिनन्दन! 'बहादुर तीमुथियुस' नामक इस श्रृंखला में आपसे पुनः मिलकर मुझे खुशी हुई। मुझे उम्मीद है कि आपको यह श्रृंखला अत्यंत लाभदायक लगी होगी।

जीवन में, जब भी हम कोई कार्य की जिम्मेदारी लेते हैं, तो क्या हम सभी यह उम्मीद नहीं करते कि कोई हमारा साथ दे? क्या आप सोच रहे हैं कि मैं अचानक समर्थन के बारे में क्यों बात कर रहा हूँ? हम जिस श्रृंखला का अनुसरण कर रहे हैं उसका सूत्रधार एक अत्यधिक सहायक व्यक्ति है। आइए जानें कि उसने किसका और किस तरह से समर्थन किया।

आइए श्रृंखला में गहरे में जाएँ:

जब पौलुस कुरिन्थ शहर में था, तो उसने रोमियों को लिखे अपने पत्र में तीमुथियुस को 'सहकर्मी' के रूप में संदर्भित किया। तीमुथियुस यरूशलेम की अपनी अंतिम यात्रा के दौरान पौलुस के साथ था। वह रोम में अपने पहले बंदीगृह के दौरान भी पौलुस के साथ था। उल्लेखनीय रूप से, तीमुथियुस ने पौलुस की सहायता की जब उसने फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन को पत्र लिखे। इसके अलावा, हमने पिछले भाग में देखा कि वह पौलुस के साथ तब भी था जब उसने दंगो का सामना किया ।

तीमुथियुस को लिखे गए पत्र :

तीमुथियुस इफिसुस की कलीसिया में सेवकों को प्रशिक्षित करने में लगा हुआ था। इस समय के दौरान, पौलुस ने मकिदुनिया से अपना यह पत्र लिखा। इस पत्र में, पौलुस ने तीमुथियुस को 'विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र' और 'तीमुथियुस, मेरा पुत्र' कहकर संबोधित किया, उसके प्रति अपने प्रेम की पुष्टि की और उसे कलीसिया के प्रबंधन के लिए अच्छी सलाह दी। पौलुस ने तीमुथियुस से विनती किया कि वह उसे सौंपी गई कलीसियाई प्रबंधन की जिम्मेदारी की रक्षा करे। जब पौलुस को दूसरी बार रोम में कैद किया गया, तो उसने तीमुथियुस को अपनी दूसरी पत्री लिखी, जिसमें उसने उसे अपने पास आने के लिए कहा।

दूसरी पत्री पौलुस के विश्वास को प्रदशित करती है की तीमुथियुस अपनी पूरी क्षमता से लगन के साथ उसके कार्य को उसकी मृत्यु के पश्चात भी जारी रखेगा। पौलुस ने तीमुथियुस को सलाह दी कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली करे(2 तीमुथियुस 1:14)।

यहां तक कि जब पौलुस मृत्यु के कगार पर था और उसे फुगिलुस,हिरमुगिनेस, देमास और सिकंदर ने त्याग दिया था, तब भी युवा तीमुथियुस के प्रति उसके गहरे प्रेम और विश्वास ने उसके उत्साह को बढ़ाया होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि तीमुथियुस अंत तक पौलुस का कट्टर समर्थक बना रहा।

देखिए दोस्तों! हमारा तीमुथियुस हर खुशी, दुख, उत्थान, पतन, संघर्ष और समस्या में पौलुस के साथ खड़ा रहा। अन्य सेवक भी पौलुस के साथ थे; हालाँकि, उनमें से कुछ संघर्षों और समस्याओं के कारण उसे छोड़ गए। क्योंकि तीमुथियुस ने अंत तक सभी परिस्थितियों में पौलुस का साथ दिया, इसलिए पौलुस को भरोसा था कि तीमुथियुस उसके बाद सेवकाई का अच्छे से ख्याल रखेगा। इन अंतिम दिनों में, आइए हम भी उन सेवकों के साथ जुड़ें और उनका समर्थन करें जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं की बेदारी आये।

(मिशन यात्रा जारी है)

Heart Beat

भावना मत जगाओ जीवन मत खोओ

मैं आठवीं कक्षा में पढ़ रहा हूं। मुझे अपनी साथी छात्र के माध्यम से LCBTQ के बारे में पता चला और उसके बाद मुझे कई नए दोस्त मिल गए हैं और वे सभी मेरे साथ अच्छे से घुल-मिल गए लेकिन केवल एक ही व्यक्ति ने मुझे बहुत प्यार किया। उसके दयालु शब्दों ने और ध्यान और अधिक आकर्षित किया और अब मैं उसके साथ गलत रिश्ते में हूं और मैं हमेशा उस व्यक्ति से बात करना चाहता हूं और उसे देखना चाहता हूं लेकिन मुझे पता है कि यह ग़लत है और मैं इससे बाहर नहीं आ सकता हूं। मैं क्या कर सकता हूं।-अभिषेक।

प्रिय भाई अभिषेक, आपका पत्र पढ़कर थोड़ा आचर्य हुआ, दुख हुआ कि आज का युवा समाज पश्चिमी संस्कृति के नाम पर कई गलत आदतों और खतरनाक रास्तों पर चल रहा है। अभिषेक आप जिस रिश्ते में फंसे हैं वह सिर्फ अपमानजनक रिश्ता नहीं बल्कि बहुत ही खतरनाक नापाक रिश्ता है।

अभिषेक यह कोई सामान्य रिश्ता नहीं है या स्नेह नहीं है।समाज द्वारा मान्यता नहीं मिली है और यह अपमानजनक है। खासकर अशास्त्रीय है। हमारे भारतीय कानून में इस तरह के पाप में शामिल होना अपराध है।

लेकिन मनुष्य आधुनिकता को संस्कृति कहकर सामान्य जीवन से बाहर और इसके विपरीत जीने की कोशिश करता है। यह अच्छी तरह समझ में आ गया है कि नैतिकता, ईमानदारी और शील का पतन हो गया है।

पवित्र शास्त्र में ऐसा एक वचन है- हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अन्धियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं।(यशायाह:5:20). आज दुनिया बुरी चीज को खराब रिश्ते को अच्छा रिश्ता कहती है।एक आवाज को खतरनाक प्रथा को मंजूरी देती है। परमेश्वर सभी पापों को माफ करता है लेकिन परमेश्वर सोदाम, कुमारा के पाप से बिल्कुल नफरत करता हे। क्योंकि इस पाप के कारण शहर ही नष्ट हो गया था। शैतान परमेश्वर द्वारा बनाए गये खूबसूरत रिश्तों और नैतिकता को नष्ट कर देता है और इसके बनाये मानव जाति के चरित्र को बदलने के लिए गलत रिश्ते और विचार लाता है और उन्हें पाप पूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

इस LGBTQ के पीछे शैतान, भीड़, और कई कारपोरेट काम कर रहा है। इसलिए अगर हम सतर्क रहें तो ही हम खुद को ऐसी पापी प्रथाओं से बचा सकते हैं।

LGBTQ

संभवतः इस पाप को जारी रखने के उपहार के क्या खतरे हैं?

◀ मौजूदा खराब रिश्ते के कारण आप और गलत काम करने के लिए मजबूर होंगे।

◀ कई शारीरिक रोग और संक्रामक रोग उत्पन्न होंगे।

◀ यदि आपके माता-पिता को इसके बारे में पता चला तो यह बहुत अपमानजनक और दर्दनाक होगा और आपके परिवार में बहुत भय और परेशानी पैदा होगी।

◀ आप स्कूल में है जहां आपकी पढ़ाई अनिवार्य रूप से आप पर प्रभाव डालेगी आपको स्कूल से निकाल दिया जाता है और भविष्य अन्धकारमय हो जाता है।

◀ क्या आपने कभी सोचा है कि कौन सी दोस्ती वास्तवम में अधिक मजेदार है। इस बात की संभावना है कि वह व्यक्ति आपको केवल अपनी जरूरतों के लिए इस्तेमाल करेगा और किसी और के साथ जाने के लिए मजबूर हो जाएगा।

◀ इससे आप उदास और दिल टूट जाता है। इससे भावनात्मक संकट और दिल का दर्द हो सकता है और आप ब्रेकअप कर सकते हैं और सोच सकते हैं कि आपने सभी रिश्ते छोड़ दिए हैं।

शायद इस रिश्ते से बाहर निकल जाऊं

◀ भले ही यह थोड़ा मुश्किल हो, लेकिन मन को शांति मिलेगी कि हम एक सभ्य जीवन जी रहे हैं।

◀ गलत करने का कोई दोषी विवेक नहीं होगा।

◀ इस बात का कोई डर नहीं है कि जब हम फंस जाएंगे तो समाज हमें नीची दृष्टि से देखेगा।

◀ आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

◀ आपको अपने माता-पिता प्यार और गर्म जोशी और एक वास्तविक रिश्ते का आनन्द मिलता है।

इस अपमानजनक लत से बाहर निकलने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं।

◀ सबसे पहले, उस दोस्त को दोस्ती से बाहर आइए जिसने आपको गलत भीड़ से परिचित कराया।

◀ आपको जिसने गलत रिश्ते में चलाया था उसी से मिलने की परिस्थितियों को कट करिए।

◀ उससे तुरन्त कोई भी (FB, INSTA, WHATSAPP) संपर्क तोड़ दे।

◀ जब आप उस व्यक्ति से बात करना चाहते हैं आप रक्षात्मक कार्य कर सकते हैं और खुद को व्यस्त रख सकते हैं।

◀ अपने आपको किसी तरह से व्यस्त रखें जैसे कोई वाद्ययंत्र या सीखना।

◀ अकेलापन से बचने की कोशिश करें क्योंकि एकान्त में उसके बारे में विचार अधिक आएंगे।

◀ अपने आप को किसी इन सबसे ऊपर, प्रार्थना करें कि यीशु मुझे इस पाप से मुक्त कर दे।

इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।(यूहन्ना:8:36) अभिषेक, यीशु आपको आजाद करेगा और एक नया जीवन जीने में आपकी मदद करेगा यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गयी हैं देखो सब बातें नई हो गई। (2कुरिन्तियो:5:17) ।वचन के अनुसार नया जीवन जी सकते हैं नये रास्ते पर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

उत्तम भाग

यीशु मसीह जब भी गलील से यरूशलेम की ओर यात्रा करते थे, तो उनके लिए यरीहो, बेतनिय्याह और बैतफगे से होकर जैतून के पहाड़ से उतरते हुए यरूशलेम शहर में जाना प्रथागत था। बैतनिय्याह गाँव की इन यात्राओं में से एक के दौरान ही वह एक विशेष परिवार से परिचित हुआ। (यूहन्ना 11:5) के अनुसार, “यीशु मार्था और उसकी बहन और लाज़र से प्रेम करते थे।” यीशु ने इन बच्चों को, जो बिना माता-पिता के थे, अपने बच्चों की तरह पालते थे। वे आपस में एक गहरा रिश्ता साझा करते थे। जब भी यीशु यरूशलेम आते थे, तो वे इस परिवार से बातचीत करने, भोजन करने या अपनी यात्रा जारी रखने से पहले आराम करने के लिए बैतनिय्याह जाते थे।

यीशु और इस परिवार के बीच इतना गहरा सम्बन्ध कैसे हो गया? इस रिश्ते की शुरुआत कैसे हुई? (लूका 10:38) बताता है, “जब यीशु और उसके शिष्य जा रहे थे, तो वह एक गाँव में आया जहाँ मार्था नाम की एक महिला ने उसके लिए अपना घर खोला।” यीशु जहाँ भी जाता था, बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चलती थी। मार्था भी भीड़ के बीच यीशु को देखने आई थी।

उसने तुरंत यीशु को अपने घर आमंत्रित करने की इच्छा जागृत हुई, और वह सोचने लगी, “अगर यीशु हमारे घर आते हैं, तो यह कितना अद्भुत होगा।” हालाँकि, वह इस विचार से जूझ रही थी, “क्या वह हमारे घर आएंगे यदि मैं उन्हें इतनी भीड़ के बीच आमंत्रित करूँ?”

इस आंतरिक संघर्ष के बावजूद, मार्था ने यीशु के सामने खड़े होने, उनका अभिवादन करने और उन्हें आमंत्रित करने का साहस जुटाया, और कहा, “आपको हमारे घर आना चाहिए।” प्रेम की लालसा रखने वाली युवती ने कहा होगा, “हमारे पास न तो पिता है और न ही माता; आपको अवश्य आना चाहिए और अपनी उपस्थिति से हमें अनुग्रहित करना चाहिए तथा हमें आशीर्वाद देना चाहिए।” यीशु ने उसकी भावनाओं को समझा होगा और कहा, “मैं अवश्य आऊँगा, बेटी,” और वह अपने बारह शिष्यों के साथ उनके घर में प्रवेश किया।

स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टीकर्ता, महान भविष्यवक्ता, उद्धारकर्ता के अपने घर आने की खुशी में, मार्था ने यीशु को बैठाया और रसोई में जाकर विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार किया, जो उसे लगा कि यीशु को पसंद आएंगे।

मार्था की एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। जैसे ही मरियम ने यीशु को देखा, वह उनके चरणों में बैठ गई और उनसे परमेश्वर के राज्य और स्वर्गीय राज्य के बारे में बताने के लिए कहा। यीशु खुशी-खुशी उसे सब कुछ समझा रहे थे। जब मार्था ने मरियम को यीशु से बात करते हुए सुना, तो वह परेशान होकर रसोई से बाहर आई और यीशु से शिकायत की, “मैं रसोई में परेशान हूँ, और मरियम यहाँ आपसे बात कर रही है। आप उसे मेरी सहायता करने के लिए कह सकते थे।” यीशु को अपने घर में लाकर, मार्था

ने उन्हें दोषी ठहराया। यीशु ने मार्था को देखा और कहा, "मार्था, मार्था, तुम बहुत सी बातों के बारे में चिंतित और परेशान हो। लेकिन एक चीज़ की ज़रूरत है, और मरियम ने वह उत्तम भाग चुना है, जो उससे छीना नहीं जाएगा।"

कभी-कभी, मार्था की तरह, हम सोच सकते हैं कि हमें यीशु को खुश करने के लिए कुछ करने की ज़रूरत है और सुसमाचार प्रचार, बच्चों की सेवकाई, युवा सेवकाई, ट्रैक्ट सेवकाई, गाँव की सेवकाई और ऐसे कई सेवकायियों में शामिल होना चाहिए। जबकि ये सभी महत्वपूर्ण हैं, पर सबसे महत्वपूर्ण बात उनके चरणों में बैठना है।

मार्था यीशु को भोजन परोसने के बारे में चिंतित थी, बिना यह पूछे कि वह क्या चाहता है या वह खाने की मनोदशा में है या नहीं। इसी तरह, हम अक्सर प्रभु के चरणों में समय बिताए बिना, प्रार्थना किए बिना, बाइबल पढ़े बिना या पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन मांगे बिना कई सेवकायियों में शामिल होते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो यह भ्रम, चिड़चिड़ापन, शांति की कमी, थकान और निराशा की ओर ले जाता है। और हम अपनी परेशानियों के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराते हुए पाते हैं।

प्रिय नौजवानों, प्रभु हमसे यही उम्मीद करते हैं कि हम मरियम की तरह उनके चरणों में बैठें, उनके विषय में अपने ज्ञान में बढ़ें और उनके साथ अपने रिश्ते को प्रतिदिन विकसित करें। जब हम उनके साथ अपने रिश्ते में बढ़ते हैं, तो हम उनकी आवाज़ को स्पष्ट रूप से सुन सकते हैं और उनके हृदय के बोझ को समझ सकते हैं। प्रभु अपनी आवाज़ सुनने और अपनी इच्छाओं को समझने के बाद उसकी इच्छा के अनुसार की गई सेवकाई से प्रसन्न होते हैं। इसलिए, प्रभु के चरणों में बैठने को हर बात से ऊपर प्राथमिकता दें, और जब आप उनकी इच्छा के अनुसार उनका काम करेंगे, तो वे इसे संतुष्टि के साथ सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए सामर्थ, बुद्धि, अनुग्रह और अभिषेक प्रदान करेंगे। क्या आप भी उत्तम भाग को चुनने के लिए तैयार हैं?

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 29/09/2024 और 29/12/2024 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।
कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

YouTube Jesus Redeems - Hindi
Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

संपर्क संख्या : +919750955548

भावना
दोष भावना

सभी जीवंत युवाओं को अभिनन्दन! इस 'भावनाएं' श्रृंखला के माध्यम से हर महीने आपसे मिलकर मुझे बेहद खुशी होती है। पिछले महीने, हमने चिंता के बारे में सीखा। मुझे उम्मीद है कि प्रभु ने कई लोगों को उनकी चिंताओं से मुक्ति दिलाई है। इस महीने, आइए एक और भावना के बारे में जानें- 'दोष भावना'।

जब भी आपके जीवन में कुछ बुरा होता है, तो क्या आप तुरंत सोचते हैं, "मैं इससे इसलिए गुजर रहा हूँ, क्योंकि मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है?" इस भाग के माध्यम से, यीशु मसीह निस्संदेह आपके साथ अंतःक्षेप करेंगे, मानसिक स्पष्टता प्रदान करेंगे, और आपको शांति प्रदान करेंगे। वह आपको आपके दोषी विवेक से भी मुक्ति दिलाएंगे।

दोष भावना के प्रमुख कारण

- परमेश्वर के विरुद्ध पाप करना।
- अपने शरीर के विरुद्ध पाप करना (जैसे ड्रग्स, शराब का उपयोग करना, और अनुचित संबंधों में शामिल होना)।
- माता-पिता या रिश्तेदारों के भरोसे को तोड़ना।
- पदोन्नति पाने के लिए कार्यस्थल पर सहकर्मियों को धोखा देना।
- ऐसे कारण हमारे दिलों में दोष भावना लाते हैं, जो शैतान द्वारा प्रेरित होते हैं। हमें ऐसे क्षणों के दौरान अपने मन को साफ रखना चाहिए।

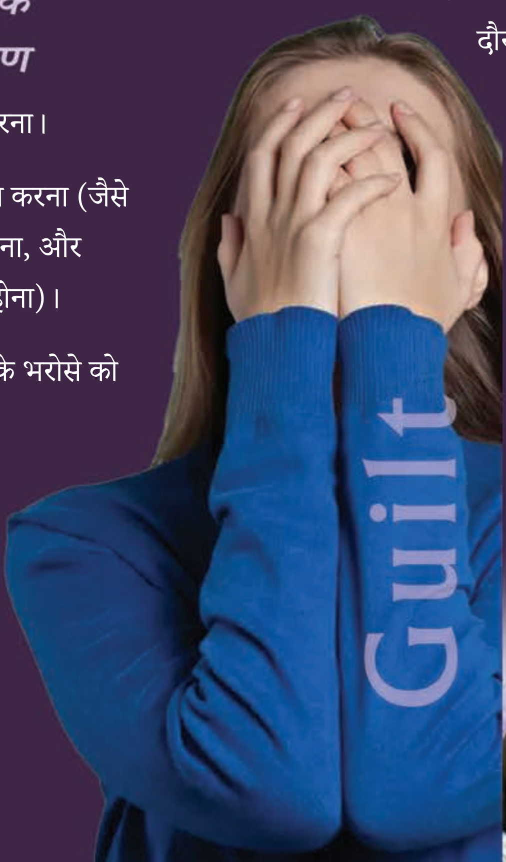

बाइबिल के पात्र जिन्होंने दोष भावना का सामना किया

यहूदा इस्करियोती:
उसने 30 चांदी के सिक्कों के लिए यीशु को धोखा दिया, अपने कार्य के लिए

दोषी महसूस किया, और अपनी जान ले ली (मत्ती 27:5)।

पतरस:
हालाँकि उसने यीशु को अस्वीकार किया, उसने पश्चाताप किया, क्षमा माँगी, और दोष भावना से छुटकारे का अनुभव किया (लूका 22:62)।

• आध्यात्मिक मार्गदर्शकों से सहायता लें: अपनी चिंताओं को किसी भरोसेमंद मसीही मित्र, पास्टर या परामर्शदाता के साथ साझा करें जो मार्गदर्शन, प्रार्थना और प्रोत्साहन दे सके।

• स्वतंत्रता में चलें: एक बार क्षमा किए जाने के बाद, मसीह द्वारा दी जाने वाली स्वतंत्रता को अपनाएँ। परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जिएँ, यह जानते हुए कि आप विश्वास के माध्यम से न्यायसंगत हैं (रोमियों 5:1)।

पतरस को दोष भावना से मुक्ति मिलने का मुख्य कारण यीशु द्वारा दिया गया "क्षमा" का उपहार था। इसी तरह, अगर आप किसी को धोखा देने के लिए दोषी महसूस कर रहे हैं, तो तुरंत उनसे क्षमा माँगें। यदि उनसे क्षमा मांगना संभव नहीं है, तो सबसे पहले यीशु मसीह से क्षमा मांगें, जो क्षमा करने में शक्तिशाली हैं, और खुद को दोष भावना से मुक्त करने का प्रयास करें।

दोष भावना पर जय पाने के सरल उपाय

• पश्चाताप: अपने पापों को सच्चे दिल से परमेश्वर के सामने स्वीकार करें और क्षमा मांगें (1 यूहन्ना 1:9)।

• परमेश्वर की क्षमा स्वीकार करें: मसीह के जरिये क्षमा के वादे पर विश्वास करें। भरोसा रखें कि परमेश्वर हमारे पापों को उतनी ही दूर कर देता है जितनी दूर पूर्व और पश्चिम है (भजन 103:12)।

• अपने मन को नया करें: बाइबल में बताए गए परमेश्वर के सत्य के साथ दोष की भावनाओं को बदलें। उन आयतों पर ध्यान लगाएँ जो आपको परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह और क्षमा की याद दिलाती हैं।

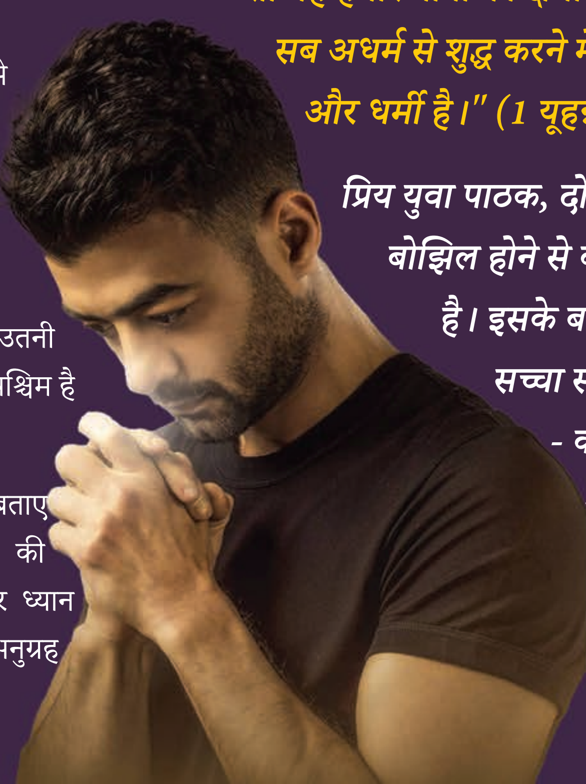

"यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)

प्रिय युवा पाठक, दोष भावना से बोझिल होने से कोई लाभ नहीं है। इसके बजाय, एकमात्र सच्चा समाधान - क्षमा - का अनुभव करें और अपने जीवन को बदलें।

परमेश्वर का चुनाव

संसार प्रायः समझदार, शिक्षित, मजबूत, गुणवान और खुबसूरत लोगों को पदवी और जिम्मेदारियों के लिए चुनता है। जबकि, परमेश्वर की पसंद हमेशा अद्वितीय और अपरिमय होती है। जैसा कि लिखा है, "परमेश्वर ने बुद्धिमानों को लज्जित करने के लिए संसार के मूर्खों को चुन लिया, और बलवानों को लज्जित करने के लिए संसार के निर्बलों को चुन लिया" (1 कुरिन्थियों 1:27)। किसी व्यक्ति की स्थिति चाहे जो भी हो, जब परमेश्वर द्वारा चुना जाता है, तो वह उनसे मिलता है, उन्हें एक उपयुक्त पात्र में बदल देता है, और उन्हें सामर्थी कार्य करने की योग्यता प्रदान करता है।

इस्राएलियों का जीवन उनके अगुओ से बहुत प्रभावित था। ओत्नीएल, डबोरा और गिदोन के समय के पश्चात, लोगों की अगुवाई करने और उनका न्याय करने के लिए कोई उपयुक्त अगुवे नहीं थे, जिससे वे अपनी मर्जी से जीने के लिए प्रेरित हुए, और वे परमेश्वर से दूर हो गए। "उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था" (न्यायियों 21:25)। एली, बूढ़ा होने के कारण, अपने बेटों का मार्गदर्शन करने में विफल रहा, जिन्हें लोगों का नेतृत्व करना था, लेकिन वे प्रभु के बारे में अनभिज्ञ थे। परमेश्वर के विरुद्ध उनके अपराध बहुत गंभीर थे। तब तक इस्राएल में कोई भी भविष्यद्वक्ता नहीं उठा था।

तब जब परमेश्वर मनमौजी लोगों का शोक मना रहा था, तब हन्ना ने प्रभु से प्रार्थना की, एक प्रतिज्ञा की, और कहा, "हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी को एक पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर यहोवा को अर्पण करूँगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा" (1 शमूएल 1:11)। परमेश्वर ने उसकी प्रतिज्ञा स्वीकार की और उसे शमूएल दिया, जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के लिए एक न्यायाधीश और भविष्यद्वक्ता के रूप में चुना था।

हन्ना और शमूएल के दिनों में, समाज में महिलाओं और बच्चों को समाज में महत्व नहीं दिया जाता था और अक्सर उन्हें अनदेखा और नज़रंदाज़ किया जाता था। ऐसी स्थिति में प्रभु ने शमूएल को चुना और एली से कहा, "मैं अपने लिए एक विश्वासयोग्य याज़क ठहराऊंगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा। मैं उसके याजकीय घर को दृढ़ करूंगा" (1 शमूएल 2:35)। शमूएल, जिसे प्रभु ने चुना था, ने दान से लेकर बेर्शेबा तक इस्राएल का न्याय किया, उन्हें परमेश्वर के मार्गों पर ले गया, और परमेश्वर के सामने उनके लिए मध्यस्थता की, जिससे परमेश्वर की योजना पूरी हुई। "और शमूएल जीवन भर इस्राएलियों का न्याय किया" (1 शमूएल 7:15)।

जैसे प्रभु ने शमूएल को उन लोगों को सुधारने के लिए चुना जो परमेश्वरत से भटक गए थे, उसी तरह उसने आपको भी चुना है। "तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है" (यूहन्ना 15:16)। प्रभु ने आपको पाप और शाप में फंसे बहुत से लोगों को छुड़ाने और सुधारने के लिए चुना है, जो अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

अब जबकि प्रभु भारत में बेदारी केलिए आपका सामर्थी रूप से इस्तेमाल करने जा रहे हैं, इसलिए अपनी कमजोरियों पर ध्यान केन्द्रित न करें। जिस तरह शमूएल ने परमेश्वर के हृदय के बोझ को समझा और काम किया, आपको भी परमेश्वर की पुकार को सुनना चाहिए और उसका जवाब देना चाहिए, यह कहते हुए, "हे प्रभु, बोल, क्योंकि तेरा सेवक सुन रहा है" (1 शमूएल 3:10)। प्रभु आपको बहुतों के जीवन परिवर्तन करने के लिए इस्तेमाल करेंगे। "क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं" (मत्ती 20:16)। परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करने के लिए बहुतों को बुलाया जा सकता है, लेकिन केवल चुने हुए लोग ही परमेश्वर के लिए चमकते हैं।

मेरे प्रिय नौजवानों, परमेश्वर का चुनाव हमें हमेशा अचंभित करता है। अगर संसार आपको कमज़ोर, डरपोक या मूर्ख कहती है, तौभी हार न माने। "परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों कों, वरन जो हैं भी नहीं उनको चुन लिया है कि उन्हें जो हैं व्यर्थ ठहराएँ" (1 कुरिन्थियों 1:28)। आप साधारण नहीं हैं; आपको परमेश्वर ने चुना है की संसार को हिला दें!

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

प्रार्थना गाइड

अगस्त 2024

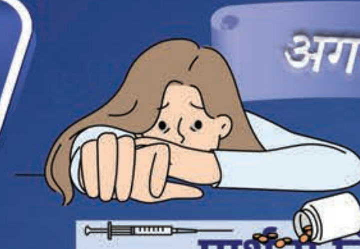

नशे की लत में फंसी लड़कियां

बाल कल्याण कार्यकर्ता अक्सर इस बात पर प्रकाश डालते हैं, कि कई मामलों में, नशे की लत में फंसी युवा लड़कियां टूटे हुए परिवारों से आती हैं या उनके माता-पिता में नैतिक ईमानदारी की कमी होती है। ऐसी पृष्ठभूमि की लड़कियां विशेष रूप से असुरक्षित होती हैं। इसलिए, माता-पिता के लिए अपने बच्चों पर कड़ी नज़र रखना और उन्हें पारिवारिक समस्याओं से बचाना ज़रूरी है। 99% मामलों में पारिवारिक समस्याएँ बच्चों के नशे की लत से प्रभावित होने के लिए ज़िम्मेदार होती हैं। माता-पिता को अपने बच्चों की परवरिश करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। आजकल, बच्चे कम उम्र में ही बीयर पीना शुरू कर देते हैं, फिर शराब पीना और गांजा पीना शुरू कर देते हैं। हाल ही में, उन्होंने दर्द निवारक गोलियों को पानी में घोलना और घोल का इंजेक्शन लेना शुरू कर दिया है।

प्रार्थना निवेदन

1. प्रार्थना करें जवान लड़कियों के जीवन में बदलाव के लिए जो गलत रिश्तों और नशे की लत के कारण अपनी जान गवाँती हैं।
2. प्रार्थना करें कि परमेश्वर नशे की लत में फंसी युवा लड़कियों को छुए और बचाए।
3. प्रार्थना करें पारिवारिक समस्याओं और माता-पिता की अनैतिकता से प्रभावित लड़कियों के उपचार के लिए।
4. प्रार्थना करें उन नौजवान लड़कों और लड़कियों के उद्धार के लिए जो अपने पारिवारिक परिस्थितियों के कारण नशे की लत में फंस गए हैं।

कैबिनेट मंत्री

देश के 18वें चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने 293 सीटें जीतकर लगातार तीसरी बार सरकार बनाई है। श्री नरेन्द्र मोदी ने फिर से प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है। उनके साथ 30 कैबिनेट मंत्री, 5 स्वतंत्र प्रभार मंत्री और 36 राज्य मंत्री ने शपथ ली है, इस प्रकार कुल 72 केंद्रीय मंत्री बने हैं।

प्रार्थना निवेदन

1. प्रार्थना करें श्री नरेन्द्र मोदी के लिए, जिन्होंने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लिया है, कि परमेश्वर उन्हें सद्बुद्धि और सुरक्षा प्रदान करें।
2. प्रार्थना करें 71 कैबिनेट मंत्रियों पर परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए और सही निर्णय लेने की बुद्धि प्रदान करने के लिए।
3. प्रार्थना करें नई सरकार बनाने वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए कि वे प्रभावी योजनाओं को लागू करें जिससे भारत प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।
4. प्रार्थना करें विपक्षी नेता श्री राहुल गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं पर परमेश्वर के मार्गदर्शन और सुरक्षा के लिए।

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र

भारत में लगभग 70,000 अस्पताल संचालित हैं, जिनमें से 37,725 सरकारी अस्पताल हैं। इसके अतिरिक्त, 10.4 लाख निजी क्लीनिक संचालित हैं। भारत में 600 से अधिक मेडिकल कॉलेज और 3,000 दवा निर्माण कंपनियाँ हैं। भारत में दो-तिहाई डॉक्टर बिना किसी उचित चिकित्सा डिग्री के अभ्यास करते हैं। हर साल, 20 लाख विदेशी चिकित्सा उपचार के लिए भारत आते हैं।

प्रार्थना निवेदन

1. प्रार्थना करें कि भारत के सभी अस्पताल सेवा की भावना से संचालित हों।
2. प्रार्थना करें कि भारत में 3,000 दवा निर्माण कंपनियाँ बिना किसी दुष्प्रभाव के उच्च गुणवत्ता वाली दवाएँ बनाएँ।
3. स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में रिक्तियों को भरने के लिए प्रार्थना करें, यह सुनिश्चित करें कि डॉक्टरों और नर्सों की कोई कमी न हो और उपचार सुचारू रूप से जारी रहे।
4. स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में उचित डिग्री के बिना अभ्यास करने वाले नकली डॉक्टरों की पहचान और निष्कासन के लिए प्रार्थना करें।

मधुमेह रोगी

भारत में लगभग 770 लाख लोग मधुमेह से प्रभावित हैं, जिससे भारत मधुमेह रोगियों की संख्या के मामले में दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। मधुमेह के मरीज़ औसतन ₹10,000 प्रति माह खर्च करते हैं। मधुमेह के कारण दो प्रतिशत मरीज़ मर जाते हैं। वैश्विक स्तर पर, मधुमेह से प्रभावित बच्चों की संख्या के मामले में भारत दूसरे स्थान पर है।

प्रार्थना निवेदन

1. प्रार्थना करें भारत में मधुमेह से प्रभावित 770 लाख लोगों के उपचार के लिए।
2. मधुमेह से प्रभावित बच्चों के उपचार के लिए प्रार्थना करें और उन्हें किसी भी कठिनाई का सामना न करना पड़े।
3. मधुमेह के कारण होने वाली मौतों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।
4. मधुमेह के दुष्प्रभावों से प्रभावित लोगों के उपचार के लिए और हमारे देश में इस बीमारी के पूर्ण उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें।

नरक का टिकट!

भाग 7

पाप, वे जाल हैं जो शैतान हमें नरक में ले जाने के लिए बिछाता है। पिछले महीने, हमने एक ऐसे जाल के बारे में स्पष्ट रूप सीखा जिसे कहा जाता है 'निन्दा'। इस महीने, आइए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले एक और जाल के बारे में जानें जिसे 'ठोकर' कहा जाता है।

ठोकर

किसी के मार्ग में आने वाली बाधाएँ जो उसे उसके मंजिल तक पहुँचने से रोकती हैं, उन्हें आम तौर पर 'ठोकरें' या 'बाधा' कहा जाता है। लेकिन बाइबल के अनुसार, अगर किसी व्यक्ति की नज़र, वक्तव्य, कार्य और व्यवहार दूसरों को पाप करने के लिए प्रेरित करते हैं, तो वह 'ठोकर' है। बाइबल ऐसे लोगों को

अपराधी कहती है जो ऐसे ठोकरें लगाते हैं। इसे और आगे बढ़ाते हुए, इसका तात्पर्य उन लोगों को रोकना है जो हमारे कार्यों और व्यवहार के माध्यम से उन्हें पाप करने के लिए प्रेरित करके स्वयं स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए तैयार हैं। सबसे पहले, हमें यह समझना चाहिए कि 'ठोकर लगाना' एक पाप है। बाइबल इसे अधर्म के रूप में संदर्भित करती है (यहेजकेल 14:3, 4, 7)।

"ठोकर' बहुत खतरनाक है क्योंकि यह एक ऐसा पाप है जो दूसरों को पाप में गिरने का कारण बनता है।" कई लोग जानबूझकर या अनजाने में ठोकर खिलाने का यह पाप करते हैं।

- जो महिलाएँ बिना चुन्नी (दुपट्टा) पहने सार्वजनिक स्थानों पर जाती हैं, वे पुरुषों को ठोकर खिलाती हैं।

- जो लोग अपना काम करवाने के लिए ईमानदार सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देते हैं, वे ठोकर का कारण बनते हैं।

- जो मित्र शराब पीने के आदी नहीं हैं, उन्हें शराब पिलाते हैं, वे ठोकर का कारण बनते हैं।

- मोबाइल फोन का उपयोग करते समय आने वाले अनावश्यक अश्लील विज्ञापन ठोकर का कारण बनते हैं।

हम ऐसी चीज़ों की सूची बनाते रह जायेंगे।

जब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने दुखों और मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी की, तो पतरस ने यीशु को फटकारते हुए कहा, "हे प्रभु, ऐसा तुझसे दूर हो; ऐसा तुम्हारे साथ न होगा!" तो देखिए यीशु ने क्या कहा। यीशु ने पतरस की ओर मुड़कर कहा, "तू मेरे लिए ठोकर का कारण है" (मत्ती 16:29-33)। यीशु को दुख उठाना, मरना और फिर से जी उठना था, जो परमेश्वर की इच्छा थी। लेकिन पतरस परमेश्वर की इच्छा के लिए एक बाधा बन रहा था। यीशु ने हमें सिखाया कि कभी भी दूसरों के लिए ठोकर का कारण न बनें। यीशु के समय में, रोमी शासन के कारण यहूदियों के लिए कर देना अनिवार्य था। हालाँकि, इस्राएलियों को कर देने की आवश्यकता नहीं थी, और एक

यहूदी के रूप में यीशु को भी ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन यीशु ने दूसरों को ठोकर पहुँचाने से बचने के लिए कर चुकाया (मत्ती 17:24–27)।

बाइबिल परामर्श

• हमें जिस समाज में हम रहते हैं (हमारे आस-पास के लोग) और चर्च (विश्वासी) दोनों के लिए ठोकर का कारण नहीं होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:33)।

• हमें दूसरों को ठोकर नहीं पहुँचानी चाहिए, यहाँ तक कि भोजन में भी नहीं (रोमियों 14:20)।

• हमें ठोकर पहुँचाने वालों से सावधान रहना चाहिए (रोमियों 16:17)।

ठोकर पहुँचाने वालों के लिए दण्ड

बाइबिल कहती है, "हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर पहुँचती है!" 'हाय' शब्द का अर्थ है अभिशाप। यदि कोई ठोकर पहुँचाता है, तो पहले अभिशाप आता है, और फिर मृत्यु आती है। बिलाम को देखें, जिसने मूर्तियों को बलि की गई चीज़ें खाने और यौन अनैतिकता करने के द्वारा इस्राएलियों को पाप करने के लिए प्रेरित किया; वह तलवार से मरा (प्रकाशितवाक्य 2:14; गिनती 31:8)। ठोकर खिलाने का यह पाप न केवल पृथ्वी पर हमारे जीवन के दौरान हमें प्रभावित करता है, बल्कि हमारे मरने के बाद हमारी आत्माओं को नरक में ले जाने की शक्ति भी रखता है। "परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को पाप में फंसाए, उसके लिए भला होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटका दिया जाए, और वह समुद्र की गहराई में डूबा दिया जाए" (मत्ती 18:6)।

जिस आधुनिक दुनिया में हम रहते हैं, हम युवाओं के लिए, यह जांचना आवश्यक है कि क्या हम फैशन के चलन के नाम पर दूसरों के लिए बाधा बन रहे हैं। लो-हिप पैंट पहनना, आधे ढके हुए और तंग कपड़े पहनना, टैटू बनवाना, सिनेमा के गाने सुनना और गाना, उन्हें व्हाट्सएप स्टेटस के रूप में बेधड़क पोस्ट करना, इंस्टाग्राम रील में अभिनय करना, सिनेमा देखने के लिए थिएटर जाना, सार्वजनिक स्थानों पर जोड़े के रूप में घूमना, चर्च में देर से आना, आराधना के दौरान मोबाइल फोन का उपयोग करना - ये सब करके, हम अक्सर नए विश्वासियों और विश्वास में दृढ़ लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं, "अगर वे ऐसा करते हैं, तो क्या गलत है अगर मैं भी ऐसा करूँ?" इसके अलावा, इस तथ्य के बावजूद कि गैर-मसीही यीशु को स्वीकार करने में हिचकिचाहट के कई कारण हैं, प्राथमिक कारण मसीही और उनका बुरा दिखने वाला जीवन हैं।

प्रिय युवा भाई या बहन जो इसे पढ़ रहे हैं, यदि आप अब तक अपने जीवन में दूसरों के लिए ठोकर का कारण रहे हैं, तो आज ही निर्णय लें कि आप अपने कार्यों और व्यवहार के माध्यम से दूसरों को ठोकर का कारण नहीं बनेंगे (रोमियों 14:13)। शैतान हमें ठोकर का पाप करने के लिए मजबूर करके हमें नरक में ले जाने के लिए गहन रूप से काम कर रहा है। इसलिए, इस चेतावनी पर ध्यान दें और इस पाप के माध्यम से आने वाली नरक की सजा से बचें।

ठीक है दोस्तों, अगले महीने, हम एक और पाप के बारे में जानेंगे जो नरक की ओर ले जाता है।

NISUIN BERIYTH

(विवाह अनुबंध)

भाग 7

पिछले कुछ महीनों में, हमने उन रुकावटों पर ध्यान किया है जो विवाह में परमेश्वर की इच्छा को रोकने का प्रयास करती हैं। इस अंक में, आइए हम आपके विवाह में आपकी जरुरत अनुसार श्रेष्ठ परामर्शदाताओं का पता लगाएं।

हो सकता है एक ही समय में आपके पास दो या तीन प्रस्ताव आ जायें, और वे सभी आपको उपयुक्त लग सकते हैं। लेकिन आपको सूची में से सर्वश्रेष्ठ को चुनना होगा! आप क्या करेंगे? आप इस बात को लेकर अस्पष्ट हो सकते हैं कि ऐसी स्थिति में किससे सलाह लें। मनुष्यों की तलाश करने के बजाय, उस परमेश्वर के पास जाएँ जिसने आपको बनाया है और उसकी सलाह लें।

उसे कहा जाता है, 'अद्भुत सलाहकार' (यशायाह 9:6)। स्वयं के लिए एक पवित्र उपवास का दिन ठहराएँ। अपने द्वार को बंद करें और यीशु मसीह से अपने मन में चल रही हर बात कहें। उससे सही जीवन साथी चुनने में मदद माँगें। वही है जिसने आपको बनाया है। केवल वही आपको उस व्यक्ति से पूरी तरह से मिला सकता है जिसे उसने आपकी पसलियों से बनाया है या उससे जिसकी पसलियों से उसने आपको बनाया है। नौजवान लोग जो विवाह की आशा कर रहे हैं, उन्हें पहले सृष्टिकर्ता से सलाह लेनी चाहिए। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि प्रभु उनके लिए सब कुछ करेंगे।

वह परमेश्वर ही है जो औरों से अधिक चाहता है कि आप अपने जीवन में आशीषित, समृद्ध और खुशहाल रहें। उसके बाद, आपके माता-पिता ही हैं जो आपकी भलाई की सबसे अधिक कामना करते हैं। वे ही हैं जिन्होंने आपकी भलाई के लिए सबसे अधिक बलिदान दिए हैं।

एक माँ का बलिदान

- आपको जन्म देने के लिए उसने कई तरह के दर्द और तकलीफें सहीं।
- उसने आपका मनपसंद खाना पकाया और जब आप भूखे थे तो आपको खिलाने के लिए अपनी गोद में लेकर घूमती थी।
- आपको सुलाने के लिए उसने घंटों आपके पालने को झुलाया।
- जब आप बीमार थे तो उसने पूरी रात आपकी देखभाल करने के लिए अपनी नींद का बलिदान किया।

एक पिता का बलिदान

- उसने परिवार के लिए दिन-रात कमाया।
- उसने आपको मनपसंद खाना, कपड़े और खिलौने दिए की आप खुश रहें।
- उसने सुनिश्चित किया कि आपको समय पर टीका लगाया जाए।
- उसने शहर में सबसे अच्छे स्कूल, ट्यूशन सेंटर और कॉलेज की तलाश की और खर्च की परवाह किये बगैर आपकी शिक्षा पर पैसे लगाये।

अपने माता-पिता द्वारा आपको दी गई अनगिनत सुख-सुविधाओं के बारे में सोचें। बच्चों को भरोसा होना चाहिए कि जब जीवन साथी चुनने की बात आती है तो उनके माता-पिता भी "सबसे अच्छा" चुनेंगे। आजकल, वयस्क होते ही कई बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान नहीं करते हैं। वे कहते हैं, "यह मेरा जीवन है; मैं इसे अपने तरीके से जीने जा रहा हूँ; इससे तुम्हें क्या परेशानी है?" वे ऐसे लोगों से शादी करना चुनते हैं जिनमें कोई अच्छे गुण नहीं होते, कोई उचित शिक्षा नहीं होती, या कोई अच्छी नौकरी नहीं होती, सिर्फ उनके रूप-रंग को देखकर। फिर, कुछ ही महीनों में, वे तलाक के लिए अपनी जान गँवा देते हैं और परिवार की शांति भंग कर देते हैं।

अपने माता-पिता से खुलकर बात करें। अपने साथी के लिए अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं को उनके साथ साझा करें। जो लोग हमेशा आपकी भलाई की कामना करते हैं और आपके उन्नति के लिए काम करते हैं, वे निश्चित रूप से आपको "सर्वश्रेष्ठ" जीवन साथी चुनने में मदद करेंगे। पवित्र बाइबल कहती है, "अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान करो, ताकि तुम समृद्ध हो सको और पृथ्वी पर लंबे समय तक जीवित रहो।" जब आप अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं, उनसे सलाह लेते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं, तो आपके स्वर्गीय पिता आपके कार्यों से प्रसन्न होंगे और आपको आशीष देंगे।

पवित्र बाइबल में, राजा दाऊद ने अपने 40 साल के शासनकाल के दौरान लड़ी गई सभी लड़ाइयों में जीत हासिल किया। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने प्रभु की सलाह मांगी और हर मामले में उनके मार्गदर्शन का पालन किया, जैसे युद्ध में जाना है या नहीं, कैसे लड़ना है और कब प्रस्थान करना है, आदि। हालाँकि, उसने शाऊल की बेटी मीकल से शादी करने में परमेश्वर की सलाह नहीं मांगी। उसने परमेश्वर से नहीं पूछा कि क्या उसे मीकल को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहिए, न ही उसने अपने माता-पिता से सलाह ली। मीकल, जो दाऊद के शाही महल में रहना चाहती थी, जब उसे अपने जीवन के डर से शाऊल के महल से भागने के लिए मजबूर किया गया, तो वह उसके साथ नहीं गई। काश अगर मीकल ने दाऊद की पहली पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाई होती, तो दाऊद की कई पत्नियाँ नहीं होतीं। शायद उसे कई बच्चों के होने के कारण आने वाली परीक्षाओं, अपमानों और कठिन रास्तों का सामना नहीं करना पड़ता। एक महान राजा जिसने इस्राएल पर इतने प्रभावी ढंग से शासन किया, उसका पारिवारिक जीवन अनुकूल क्यों नहीं हो सका? इसके विषय में विचार करें!

(जारी)

गोल्डन गर्ल

सभी सफल नौजवानों को हार्दिक अभिनन्दन। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए लक्ष्य का होना बहुत जरूरी है। जब तक हमारा लक्ष्य स्पष्ट नहीं होगा, हम सफल नहीं हो सकते। सबसे पहले, हमारा लक्ष्य बहुत सटीक होना चाहिए। यही हमें सीधे सफलता की ओर ले जाएगा। यह एक ऐसे सफल व्यक्ति की कहानी है, जिसने अपने लक्ष्य को एकदम सही से पहचान कर सफलता प्राप्त की।

पी.टी. उषा का जन्म 27 जून, 1964 को केरल राज्य में हुआ था। छोटी उम्र से ही उन्हें खेलों में गहरी रुचि थी। एथलेटिक्स में उनकी प्रतिभा असाधारण थी। 13 साल की उम्र में उन्होंने अपनी प्रतिभा दुनिया के सामने पेश की। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की एथलेटिक्स मीट में 100 मीटर की दौड़ में भाग लिया और राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने अपनी प्रतिभा को निखारना जारी रखा और विभिन्न स्पर्धाओं में कई पदक जीते। उन्होंने 20 वर्षों तक ट्रैक और फील्ड प्रतियोगिताओं में भाग लिया और कई रिकॉर्ड बनाए।

भारत की सर्वश्रेष्ठ एथलीटों में से एक के रूप में, उन्हें अक्सर "ट्रैक और फील्ड की रानी" के रूप में जाना जाता है। लंबे कदमों वाली एक सुंदर धावक के रूप में, उन्होंने 1980 के दशक में अधिकांश समय एशियाई ट्रैक-एंड-फील्ड स्पर्धाओं में अपना दबदबा बनाए रखा और कुल 23 पदक जीते, जिनमें से 14 स्वर्ण थे।

उनकी उपलब्धियों के सम्मान में, भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री और अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें वर्ष 1984, 1985, 1986, 1987 और 1989 में एशिया की सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट का पुरस्कार मिला। आज, वह भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष के रूप में कार्य करती हैं और कई अन्य एथलीटों के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं।

इसे पढ़ रहे प्रिय युवाओं, जीवन में लक्ष्य निर्धारित करना बेहद जरूरी है। अगर आप अपना लक्ष्य सही तरीके से चुनते हैं और अपना पूरा ध्यान उस पर केंद्रित करते हैं, तो आप निश्चित रूप से सफल होंगे। लगातार प्रयास करते रहें, और एक दिन आप भी कई लोगों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शक बनेंगे।